THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
TUESDAY, DECEMBER 1, 2015

Sanchi varsity set to start course in Chinese

Ramendra.Singh
@timesgroup.com

Bhopal: After a high demand from students for Chinese language, Sanchi University has decided to launch a one-year certificate course in Chinese from next academic session. Sanchi University will be the first in state to launch certificate course in Chinese language.

Public relations officer Sanchi varsity, Vijay Dubey said this will help students from India to learn the culture of China in a better way. "There is a huge study material of Buddhism in Chinese. Students in India are keen to learn and study them thoroughly. For this reason, they have shown keen interest in learning Chinese language," said Dubey.

He said that the Sanchi University is also looking to start a three-month certificate course in Chinese language. "Before launching a full-fledged one-year course, we are mulling to have a short-term certificate course within this academic session. Final call to start three-month course is yet to be taken," Dubey said.

At present university has one assistant professor to teach Chinese language. "Assistant Professor Prachi Agarwal has deep understanding of modern Chinese language which is much in vogue," he said. Besides, Sanchi University will regularly invite guest faculty for the teaching Chinese language. When contacted, assistant professor Prachi said, "Demand for Chinese language is high across the world. India and China has several common culture and students from both countries wish to learn each other's language."

She added that students having proper understanding of Chinese language will open several job opportunities in China. "There is a huge demand of manpower in China but they provide opportunity to those people only who have deep understanding of the Chinese language. Owing to lacking their language, several deserving candidates do not get opportunity. This course will help such students in the future," said assistant professor Prachi.

She claimed that it will help boosting the tourism industry also. "Several tourists from China wish to visit India to learn the culture and society. There is a communication problem as people here do not have the understanding of the Chinese language. Huge number of Chinese students also wish to learn Indian language owing to the same reason," she said.

सिटी पत्रिका

भोपाल. मंगलवार. 01.12.2015 02

सांची विश्वविद्यालय सिखाएगा चीनी भाषा

भोपाल @ पत्रिका

mp.patrika.com

भारतीय छात्र चीनी भाषा को नजर अंदाज नहीं कर सकते, क्योंकि चीन के साथ हमारा व्यपार भी बढ़ रहा है। वहीं ग्लोबल स्तर पर छाप छोड़ने के लिए भी यह भाषा जरूरी हो गई है। इसको ध्यान में रखते हुए सांची बौद्ध ज्ञान अध्ययन विवि चीनी भाषा का शॉर्ट टर्म कोर्स शुरू करेगा। विवि के अनुसार सांची विश्वविद्यालय ने इसके लिए एक असिस्टेंट प्रोफेसर प्राची अग्रवाल की भर्ती कर ली है। है। उन्होंने चीन में रहकर ही पढ़ाई की है। इसके अलावा वे चीनी भाषा में पीएचडी कर रही हैं। प्राची अग्रवाल का कहना है कि चाइनीज भाषा का महत्व वैश्विक स्तर पर बढ़ा है।

डिग्री कोर्स में दिया जाएगा विकल्प

विवि के प्रवक्ता विजय दुबे का कहना है कि अगले सत्र से इसे शॉर्ट टर्म कोर्स के रूप में शुरू किया जा रहा है। ये तीन से छह महीने का हो सकता है। इसमें चीनी भाषा का बारीकी से अध्ययन कराया जाएगा। बाद में डिग्री कोर्स में भी वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाएगा।

१२

सांची विविः मेडिकल सेंटर खुलेगा विभिन्न पद्धतियों पर होगा शोध

भोपाल (नप्र)। सांची विश्वविद्यालय देश-विदेश की चिकित्सा पद्धतियों पर रिसर्च और उनके सरंक्षण के लिए मेडिकल सेंटर खोलेगा। इसको लेकर अगले साल मार्च में सभीं चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञों की कार्यशाला होगी। इसमें सेंटर पर चर्चा के साथ यहां सभी चिकित्सा पद्धतियों से नई पद्धति विकसित किए जाने के लिए रिसर्च भी होगी गी। विवि का दावा है कि देश की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों के अलावा चीन, जापान की प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों पर एक साथ शोध कर नई खोज की जाएगी। लुप्त होने वाली और आदिवासी चिकित्सा पद्धतियों को भी आम जनता तक पहुंचाने का काम किया जाएगा। सांची विवि के रजिस्ट्रार राजेश गुप्ता ने बताया कि भारतीय चिकित्सा ज्ञान को सहेजने और आम लोगों तक इसकी जानकारी पहुंचाने के लिए केंद्र की स्थापना की जा रही है।

The Hitavada
BHOPAL ■ Saturday ■ December 19 ■ 2015
8

Sanchi Boddh University to held workshop on traditional medical system in March

■ Staff Reporter

A WORKSHOP on traditional medical system will be held at Bhopal by Sanchi Boddh University in March. Experts and scholars of different systems of medicines have been invited to the workshop. Objective of the workshop is to co-ordinate and integrate various Indian medical systems and evolve knowledge thereby to benefit people.

Indian systems of medicines have been adopted on a large scale since ancient times on the basis of local conditions and environment. Systems like Ayurveda, Yoga & Pranayam, Panchkarma, Tibetan medicines, Unani, chemical formulations & Siddha, Reiki, magnetotheraphy, acupressure, acupuncture and several other systems of treatment are being used in India on a large scale.

At integrated medical treatment centre of the university, along with traditional systems of medicine conservation and treatment through tribal and near-extinct traditional systems of medicines will also be undertaken. Apart from quality research in this field, the university may also publicise these systems of medicine through medical centres useful for common people. Besides, short syllabi to popularise these system among students will also be chalked out, which will also be beneficial for common people. Education Council of the university has also approved proposal to establish integrated medical treatment centre.

पत्रिका
भोपाल. सोमवार. 21.12.2015
07

विलुप्त चिकित्सा पद्धतियां बचाएगा सांची विवि

भोपाल. सांची विश्वविद्यालय में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों को एकीकृत करने और समन्वित चिकित्सा केंद्र स्थापित करने की दिशा में पहल शुरू कर रहा है। इसके लिए आयुर्वेद, योग एवं प्राणायाम, पंचकर्म, तिब्बती चिकित्सा, यूनानी, रसशास्त्र एवं सिद्ध, रेकी, चुंबक चिकित्सा, गंध चिकित्सा, फ्लावर थैरेपी, एक्युप्रेशर, एक्यूपंचर जैसी पद्धतियों पर एक साथ काम होगा। खास बात यह है कि आदिवासी और विलुप्त हो रही परंपरागत पद्धतियों को जिंदा रखने के लिए काम शुरू किया जाएगा। इसके केंद्र को बनाने के लिए सांची विश्वविद्यालय ने कार्यवाही भी शुरू कर दी है। इसका मकसद बीमार व्यक्ति को इन चिकित्सा पद्धति से जल्द से जल्द आराम दिलाना है। इस के लिए देश भर के विषय विशेषज्ञों से सुझाव लिए जा रहे हैं। साथ ही इन पर विवि में मंथन करने के लिए मार्च में राष्ट्रीय कार्यशाला भी आयोजित होगी। जिसमें मूल पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए पूरी योजना तैयार की जाएगी।

दैनिक भास्कर

भोपाल, गुरुवार 31 दिसंबर, 2015 8

एक चिकित्सा पद्धति की कमी को दूसरी से पूरा करके करेंगे इलाज

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में होगी समन्वित चिकित्सा केंद्र की स्थापना

एजुकेशन रिपोर्टर | भोपाल

इलाज के लिए प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की कमियों को अन्य वैकल्पिक पद्धतियों से दूर कर इलाज बेहतर तरीके से करने का काम सांची बौद्ध एवं भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में होगा। इसके लिए विवि में समन्वित चिकित्सा केंद्र की स्थापना की जा रही है।

इस नए प्रयोग के लिए विवि देश भर के ऐसे चिकित्सकों को एकजुट करने जा रहा है जो विभिन्न पद्धति से इलाज कर रहे हैं। करीब ढ़ाई हजार ऐसे चिकित्सकों की सूची तैयार की जा रही है जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की कमियों को वैकल्पिक चिकित्सा से पूरा कर इलाज कर रहे हैं। मार्च में इन चिकित्सकों का जमावड़ा विवि में लगेगा।

इलाज की लुप्तप्राय विधियों का होगा संरक्षण

विश्वविद्यालय के अतिरिक्त संचालक विजय दुबे के अनुसार अलग अलग दर्शन पर लंबे वक्त में विकसित हुई इन चिकित्सा विधाओं के दर्शन का सामंजस्य स्थापित कर एक एकीकृत स्वरूप तैयार करने की जरूरत महसूस की जा रही थी। दार्शनिक और सैद्धांतिक स्तर के इस कार्य को किसी अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र में किया जाना भी संभव नहीं है। इसीलिए सांची विवि में स्थापित होने वाले इस केंद्र में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ ही आदिवासियों और परंपरागत इलाज की लुप्तप्राय विधियों के संरक्षण और प्रचलन का कार्य भी करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है जिस पर विवि की विद्या परिषद ने भी सहमति जता दी है।

ये काम होंगे केंद्र में

- चिकित्सा पद्धतियों को एकीकृत करने का प्रयास किया जाएगा।
- पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के विद्वानों को जोड़ा जाएगा।
- मार्च में राष्ट्रीय कार्यशाला से केंद्र की शुरूआत होगी।
- आदिवासी और लुप्तप्राय परंपरागत पद्धतियों का भी संरक्षण किया जाएगा।
- आमजनों को प्रशिक्षण दिया जाएगा जिससे गांवों में सुलभ चिकित्सा संभव होगी
- विधाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए अल्पकालीन पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा।
- केंद्र में उच्चकोटि का शोध एवं संरक्षण पर कार्य किया जाएगा।